प्रमाणप्रमेयकलिका (फोल्डर नं. ००१०४६)

नरेन्द्रसेन विरचित – सम्पादक-दरबारीलाल कोठिया

मुख्य टाइटल

विषयानुक्रमणिका

ग्रन्थ संकेत-सारिणी ---------- ७

ग्रन्थमाला संपादकोंका वक्तव्य ---------- ११

प्राक्कथन ---------- १५

संपादकीय ----------३१

प्रस्तावना ---------- १-६०

ग्रन्थ

प्रमाणमेयकलिका ---------- १

नाम ---------- १

भाषा और रचना शैली ----------२

बाह्यविषय-परिचय ----------३

आभ्यन्तरविषय-परिचय ---------- ४

मंगलाचरण ---------- ४

तत्त्वजिज्ञासा ---------- ७

प्रमाणतत्त्व परीक्षा ---------- ११

ज्ञातृव्यापार परीक्षा ---------- ११

इन्द्रियवृत्ति-परीक्षा ---------- १४

कारकसाकल्य परीक्षा ---------- १५

सन्निकर्ष परीक्षा ---------- १६

प्रमाणका निर्दोष स्वरूप ----------१८

प्रमाणका फल ---------- १९

प्रमाण और फलका भेदाभेद ---------- १९

ज्ञानके अनिवार्य कारण ---------- २०

प्रमेयतत्त्व परीक्षा ---------- २२

सामान्य परीक्षा ---------- २३

विशेष परीक्षा ----------३१

सामान्यविशेषोभय परीक्षा ---------- ३७

ब्रह्म परीक्षा ---------- ४२

वक्तव्यावक्तव्यतत्त्व-परीक्षा ---------- ४६

सामान्य विशेषात्मक प्रमेय सिद्धि ---------- ४७

ग्रन्थकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थकर्त्ताका परिचय ---------- ४८
नरेन्द्रसेन नामके अनेक विद्वान् ---------- ४८
प्रमाणप्रमेयकलिकाके कर्त्ता नरेन्द्रसेन ---------- ५७
नरेन्द्रसेनकी गुरु-शिष्य परम्परा ---------- ५८
नरेन्द्रसेनाक समय ---------- ५९
नरेन्द्रसेनका व्यक्तित्व और कार्य ---------- ५९
उपसंहार ---------- ६०
ग्रन्थ विषय सूची ---------- ६१
प्रमाणप्रमेयकलिका मूल और टिप्पणी ---------- १-४६
मङ्गलाचरणम् ---------- १
तत्त्व जिज्ञासा ----------१-३
प्रमाणतत्त्वपरीक्षा ---------- ४-१८
प्रभाकराभिमतस्य ज्ञातृव्यापारस्य प्रामाण्यपरीक्षणम् ---------- ४-६
ज्ञातुर्व्यापारो भिन्नोभिन्नो वा ---------- ४
भेदे संबन्धासिद्धिः ---------- ४
स क्रियात्मकोक्रियात्मको या ---------- ५
क्रियात्मकत्वे सा क्रियापि भिन्ना अभइन्ना वा ---------- ५
अक्रियात्मकत्वे कथमसौ व्यापारो नाम ---------- ५
अभिन्नत्वे तु तयोरेकरूपतापत्तिः ---------- ५
पुनरप्यसौ नित्योनित्यो वा ---------- ६
नित्यत्वेर्थक्रियासम्भवः ---------- ६
अनित्यत्वे चोत्पादककारणाभावः ---------- ६
आत्मन उत्पादककारणत्वाभ्युपगमे तस्य नित्यत्वेन पूर्ववदर्थक्रियानुपपत्तिः ---------- ६
सांख्य-योगाभिमताया इन्द्रियवृत्तेः प्रामाण्यपरीक्षणम् ---------- ७-९
इन्द्रियवृत्तेरचेतनत्वेन तस्या अर्थप्रमितौ साधकतमत्वायोगः ---------- ७
अचेतनत्वं चन्द्रियाणां प्रकृतिपरिणामत्वात् ----------८
इन्द्रियवृत्तिरिन्द्रियेभ्यो भिन्ना भिन्ना वा ----------८
बेदे तेषामेवेयं वृत्तिर्नान्येषामिति ----------८
अभेदे इन्द्रियाण्येव वृत्तिरेव वा स्यात् ----------८
ज्ञानेन व्यवहितत्वादपि नासौ प्रमाणम् ----------८
भट्टजयन्ताभिमतस्य सामग्र्यपरनामकस्य कारकसाकलस्य प्रामाण्यपरीक्षणम् ---------- १०-१४
कारकसाकल्यस्य स्वरूपमेवासिद्धम् ---------- १०
सकान्येव कारकाणि कारकसाकल्यं तद्धर्मो वा तत्कार्यं वा पदार्थान्तरं वेति
विकल्पैः तस्य निरासः ---------- ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारकसाकल्यस्य सकलकारकरूपत्वे कर्तृकर्मकरणरूपाणां तेषामेकत्रैकदानुपपत्तिः
विरोधश्च सहानवस्थालक्षणः ----------१२
तद्धर्मत्वे संयोगोन्यो वा ----------१२
असौ कारकेभ्यो भिन्नो भइन्नो वा ----------१३
तत्कार्यत्वेपि विकल्पद्वयम् ----------१३
नित्यानां तज्जनकत्वम्,.... ----------१३
अनित्यानां तज्जनकत्वे त्वपसिद्धान्तः ----------१३
पदार्थान्तरत्वे सर्वेषामपि पदार्थान्तराणां साकल्यप्रसङ्गः ---------- १४
पदार्थान्तरमपि तज्ज्ञानमन्यद्वा ---------- १४
इत्थं कारकसाकल्यस्य स्वरूपेणासिद्धत्वात्... ---------- १४
यौगाभिमतस्य सन्निकर्षस्य प्रामाण्यपरीक्षणण् ---------- १५-१६
सन्निकर्षस्य साधकतमत्वाभावः ---------- १६
अव्याप्तिरतिव्याप्तिश्च ---------- १६
असंभवदोषोपि ---------- १६
ज्ञानेन व्यवहितत्वाच्च न प्रामाण्यं सन्निकर्षस्य ---------- १६
स्वमतेन स्वार्थव्यवसायात्मकस्य ज्ञानस्यैव प्रामाण्य साधनम् ----------१७-२२
साक्षादर्थप्रमितौ साधकतमत्वेन ज्ञानमेव प्रमाणमिति प्रतिपादनम् ---------- १७
प्रमाणत्वान्यथानुपपत्तेरिति हेतुनापि तस्यैव सिद्धिः ---------- १७
प्रतिज्ञार्थैकदेशासिद्धत्वनिरासः ----------१८
अर्थज्ञानस्य प्रमाणत्वे फलाभावप्रसङ्ग इति नैयायिकापत्तेर्निरासः ----------१८
प्रमाणस्य साक्षात्फलमज्ञाननिवृत्तिः ----------१८
परम्पराफलं च हानोपादानोपेक्षा----------१८
अर्थाजन्यत्वेपि ज्ञानस्यार्थप्रकाशकत्वं योग्यतावशादेव ---------- १९
ज्ञानस्य स्वार्थव्यवसायात्मकत्वसिद्धिः ----------२१
बौद्धाभिमतस्य चतुर्विधप्रत्यक्षस्यापि अविसंवादित्वेन व्यवसायात्मकत्वसाधनम् ----------२१
ज्ञानस्य स्वव्यवसायात्मकत्वसिद्धिः ---------- २२
स्वात्मनि क्रियाविरोधपरिहारः ---------- २३
प्रमेयतत्त्वपरीक्षा ---------- २५-४६
सामान्यमेव प्रमाणस्य विषय िति मतस्य परीक्षणम् ---------- २५-२६
विशेषनिरपेक्षस्य सामान्यस्यासंभवः ---------- २५
कुमारिलोक्त्या समर्थनम् ---------- २५
अनुमानेन केवलसामान्यस्य निराकरणम् ---------- २६
सामान्यं वास्तवमवास्तवं वेति विकल्पद्वयेनापि सामान्यस्य निरासः ---------- २६
वास्तवत्वे धर्मो धर्मी वा ---------- २६
धर्मत्वे साधारणोसाधारणो वा ---------- २६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मित्वे असिद्धमेव ---------- २६
अवास्तवत्वे सौगतमतप्रसङ्गः ---------- २६
विशेष एव प्रमाणस्य विषय इति सौगतमतस्य परीक्षणम् ---------- २७-३०
सामान्यनिरपेक्षस्य विशेषस्याप्रतिभासः ---------- २७
पूर्वपक्षिणा स्वतन्त्राणां विशेषाणां साधनप्रयासः ---------- २७
प्रत्यक्षस्यानुमानस्य वा द्रव्याग्राहकत्वम् ---------- २७-२९
जैनेन पूर्वक्षिणो निरासः ---------- ३०
प्रत्यभिज्ञानेन प्रमाणेन द्रव्यसिद्धिः ---------- ३०
सापेक्षस्य सामान्यविशेषोभयस्य प्रमाणविषयत्वसिद्धिः ----------३१
प्रमेयत्वहेतुना जीवादितत्त्वस्य सामान्यविशेषात्मकत्वसाधनम् ----------३१
तत्त्वस्य सामान्यविशेषात्मकत्वसाधने सप्तभङ्गीप्रयोगप्रदर्शनम् ----------३१
वैशेषिकाभिमतस्य परस्परनिरपेक्षसामान्यविशेषोभयस्य प्रमाणविषयत्वनिरासः ---------- ३१-३६
निरपेक्षोभयस्य प्रमाणविषयत्वे विरोधाद्यष्टदोषप्रसङ्गः ----------३१
साद्वादिनां तु जात्यन्तरस्वीकारणेन दोषाभावः ---------- ३२
द्रव्यादिषण्णां पदार्थानां भेदसाधने वैशेषिकाणां पूर्वपक्षः ---------- ३२
द्रव्यलक्षणण् ---------- ३३
गुणलक्षणण् ---------- ३३
कर्मलक्षणण् ---------- ३३
कर्मलक्षणण् ---------- ३३
सामान्यलक्षणण् ---------- ३३
विशेषलक्षणण् ---------- ३४
समवायलक्षणम् ---------- ३४
द्रव्यादिभेदसाधने प्रयुक्तानां... ---------- ३४
जैनानां उत्तरपक्षः ---------- ३५
द्रव्याद् गुणादीनां भेदे अस्यायं गुण इत्यादिव्यपदेशाभावः ---------- ३५
व्यपदेशाभावश्च संयोगादिसम्बन्धासंभवात् ---------- ३५
द्रव्यगुणयोरयुतसिद्धत्वेन समवायस्वीकारोपि न युक्तः ---------- ३५
अयुतसिद्धिलक्षणस्याप्यनुपपत्तिः ---------- ३५
गुणगुणात्मकं द्रव्यपर्यायात्मकं जात्यन्तरमेव प्रमाणविषयमिति प्रदर्शनम् ---------- ३६
परमब्रह्म एव प्रमाणस्य विषय इति वेदान्तिनां मतस्य परीक्षणम् ---------- ३६-४२
विधिरेव प्रमाणविषयः,.... ---------- ३६
निर्विकल्पकसविकल्पकभेदात् प्रत्यक्षं द्विविधम् ---------- ३७
ब्रह्मणः निर्विकल्पकप्रत्यक्षविषयत्वम् ---------- ३७
प्रत्यक्षं विधातृ, न निषेधृ इति प्रतिपादनम् ---------- ३७
सविकल्पकमपि तत्सद्भावसाधकम् ---------- ३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुमानादपि तत्सिद्धिः---------- ३७
प्रत्यक्षादीनां प्रमाणानां भावविषयत्वमेव ---------- ३७
अभावप्रमाणस्य तद्विषयस्य चाभावस्य वेदान्तिना निराकरणम् ---------- ३८
प्रमेयत्वेन हेतुना सर्वस्य तत्त्वस्य विधित्वसाधनम् ---------- ३८
प्रतिभासमानत्वेन हेतुनापि विधिमात्रस्यैव सिद्धिः ---------- ३८
आगमोपि तदावेदकः ---------- ३८
अन्यतोपि तद्विवर्त्तत्वाद् हेतोः परमपुरुषसिद्धिः ---------- ३९
सर्वभेदानां तद्विवर्त्तत्वं च सत्त्वरूपान्वयसत्त्वात् ---------- ३९
जैनैः ब्रह्मरूपस्य विधिमात्रतत्त्वस्य निराकरणम् ---------- ३९
अद्वैतब्रह्मसाधने प्रमाणभावः ---------- ३९
प्रमाणाभ्युपगमे द्वैतसिद्धिप्रसङ्गः ---------- ३९
लोकापेक्षयापि प्रमाणाभ्युपगमः बालविलास) ---------- ३९
यथाकथंचित्प्रमाणमभ्युपगम्य तत्समालोचनम् ---------- ३९
विधिवत् निषेधोपि प्रत्यक्षतः सिद्धः ---------- ४०
प्रमेयत्वस्य होतः कालात्वयापदिष्टत्वम् ---------- ४०
प्रतिभासमानत्वमपि स्वतः परतो वा ---------- ४०
स्वतस्त्वे तदसिद्धम्, घटपटादीनां स्वतः प्रतिभासमानत्वाभावात् ---------- ४०
बेदानां ब्रह्मविवर्तत्वमपि न युक्तम्... ---------- ४०
पक्ष-हेतु-दृष्टान्ताः परस्परभिन्ना अभिन्ना वा ---------- ४१
भिन्नत्वे द्वैतसिद्धिः ---------- ४१
अभिन्नत्वे तेषामेकरूपतापत्तिः ---------- ४१
हेतोरद्वैतसाधने पुनः द्वैतप्रसङ्गः ---------- ४१
हेतुना विना तत्साधने च वाङ्मात्रतः द्वैतस्यापि सिद्धिः ---------- ४१
अदैतैकान्ते कर्मद्वैतादीनामभावः ---------- ४१
प्रकरणमुपसंहरन् सापेक्षमेव तत्त्वं प्रमाणविषयमिति सप्तभङ्गीदिशा प्रदर्शयति --------४१-४२
वक्तव्यावक्तव्यतत्त्व विचारः ---------- ४३-४६
तत्त्वं सकलविकल्पवाग्गोचरातीतं (अवक्तव्यम्),.... ---------- ४३
जैनाः तत्समालोचयन्तः प्राहुः ---------- ४४
शब्दार्थयोर्वाच्यवाचकसम्बन्धसद्भावः ---------- ४४
सहजयोग्यतासङ्केतवशाच्छब्दोर्थज्ञानं जनयति ---------- ४४
विकल्पो न नामसंश्रय एव ---------- ४४
स च निश्चयात्मकविज्ञानरूपः ---------- ४४
तेन च यथावस्थितार्थप्रतिपत्ति-प्रवृत्ति-प्राप्तिः दृश्यते ---------- ४४
तन्न सकलविकल्पविकलं तत्त्वम् ---------- ४४
समन्तभद्राचार्यवचनेन तत्समर्थनम् ---------- ४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनरपि तत्त्वं सामान्यविशेषात्मकं प्रमेयत्वहेतुना दृढयन्नाहुर्ग्रन्थकृतः ---------- ४५
स्वोक्तं समन्तभद्रस्वामिवचनेन प्रमाणयन्ति ---------- ४५
यद्येवं तत्कथं न जैनानामेवैकशासनाधिपत्यमित्याशङ्कायाः समाधानम् ---------- ४६
परिशिष्ट---------- ४७
प्रमाणप्रमेयकलिका-गतावतरणानि ---------- ४९
प्रमाणप्रमेयकलिकायां निर्दिष्टा न्यायाः---------- ५०
प्रमाणप्रमेयकलिका-गत-निदर्शनवाक्यानि ---------- ५०
प्रमाणप्रमेयकलिकान्तर्गत-विशिष्ट-शब्दाः ---------- ५१
प्रमाणप्रमेयकलिकागत दार्शनिक-लाक्षणिक शब्दाः ---------- ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org